भारतीय अर्थव्यवस्था में विमुद्रीकरण का प्रभाव
(ग्रामीण विकास के विशेष संदर्भ में)

डॉ० राजा साहु

गत् 8 नवम्बर 2016 को भारत के प्रधानमंत्री के द्वारा 500 और 1000 रूपये के नोटो को चलन से बाहर करने की घोषणा की गई। इस प्रक्रिया में राष्ट्रीय मुद्रा में परिवर्तन कर नई मुद्रा को प्रचलन में लाया जाता है, जिसे विमुद्रीकरण कहते है। विमुद्रीकरण का उद्देश्य काले धन पर रोक लगाना, भष्ट्राचार में कमी करना, आंतकवाद तथा नक्सलवाद को खत्म करना, जाली नोटो को निष्क्रिय करना तथा अर्थव्यवस्था को कैशलैस करना है। विमुद्रीकरण में बंद किए गए 500 व 1000 रूपये के नोटो का मूल्य 14.2 लाख करोड रूपये है जो कि 31 मार्च 2016 के आंकडो के अनुसार चलन में मौजूद कुल नोटो का 86.4 प्रतिशत है।

विमुद्रीकरण के निर्णय से भारतीय अर्थव्यवस्था काफी प्रभावित हुई है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र तथा ग्रामीण विकास एक अहम घटक है। ग्रामीण परिवेश में कृषि, छोटे व्यापारी तथा कृषि संबंधित क्रियाएं जैसे यातायात, उद्योग आदि पर नकारात्मक प्रभाव पडा है।